14 अध्याय

मुगल साम्राज्य का पतन

इस अध्याय में आप सीखेंगे किः

- मुगल साम्राज्य के पतन के तत्कालीन और दीर्घकालीन कारण क्या थे। उनकी कौन सी ऐसी नीतियाँ थी, जिन्होंने विशाल मुगल साम्राज्य को पतन के रास्ते ला खड़ा किया।
- मुगल शासन के दौरान विभिन्न प्रांतीय स्वायत्त राज्यों जैसे— हैदराबाद, कर्नाटक, भरतपुर, पंजाब इत्यादि ने अपनी पहचान बनाये रखी।
- सिक्खों की कौन-कौन सी मिसलें थी तथा सिक्खें ने किस प्रकार मुगलों के विरूद्ध एकजुटता बनायी।

उत्तरवर्ती मुगल काल (Post-Mughal Era)

औरंगज़ेब की मृत्यु (1707 ई.) के पश्चात् भारतीय इतिहास में एक नवीन युग का पदार्पण हुआ, जिसे उत्तरवर्ती मुगलकाल के नाम से जाना जाता है। इस समय मुगल साम्राज्य में कुल 21 प्रान्त थे, जिनमें मुअज्जम काबुल, आजम गुजरात और कामबख्श बीजापुर का सूबेदार था। जाजौ में जून, 1707 ई. में लड़े गए उत्तराधिकार के युद्ध में विजय के साथ मुअज्जम, बहादुरशाह प्रथम की उपाधि के साथ दिल्ली के तख्त पर बैठा।

बहादुरशाह प्रथम (1707–1712 ई.)

65 वर्ष की अवस्था में बहादुरशाह प्रथम सम्राट बना। अपनी इस अवस्था में कठोर व दमनात्मक नीति का अनुसरण करने में वह सक्षम नहीं था। बहादुरशाह राजकीय कार्यों में इतना अधिक लापरवाह था कि उसे शाहे बेखबर के नाम से भी जाना जाता है। उसने अपने निजी सहायक मुनिम खाँ को वजीर नियुक्त किया। इसी प्रकार जुल्फिकार खाँ को सेना प्रमुख नियुक्त किया।

राजपूतों के प्रति अपनी नीति के तहत उसने आमेर की गद्दी पर से जयसिंह को हटाकर उसके छोटे भाई विजय सिंह को बिठाने और मारवाड़ के राजा अजीत सिंह को मुगल सत्ता की अधीनता स्वीकार करने के लिए मजबूर करने की कोशिशें कीं। बहादुरशाह के दरबार में 1711 ई. में एक डच प्रतिनिधि शिष्ट मण्डल जोसुआ केटेलार के नेतृत्व में आया। इस शिष्ट मण्डल का दरबार में जोरदार स्वागत किया गया।

बहादुरशाह प्रथम ने औरंगज़ेब द्वारा लगाए गए जजिया कर की वसूली पर रोक लगा दी तथा सिक्खों के दसवें गुरू गोविन्द सिंह को सन्तुष्ट करने के लिए बादशाह ने गुरू के सम्मान में खिलअत तथा उच्च मनसब प्रदान किया था।

जहाँदारशाह (1712–1713 ई.)

बहादुरशाह की मृत्यु के बाद उसके बेटों, शाहजादा अजीमुषान, रफीउश्मान, जहाँनशाह तथा जहाँदारशाह के बीच गद्दी के लिए उत्तराधिकार युद्ध हुआ, जिसमें जुल्फिकार खाँ की सहायता से जहाँदारशाह गद्दी पर बैठा। जहाँदारशाह ने आमेर के राजा सवाई जयसिंह को मिर्जा की उपाधि के साथ मालवा का सूबेदार बनाया।

इसने मारवाड़ के अजीत सिंह को महाराजा की पदवी दी और गुजरात का सूबेदार बनाया। मराठा शासक को दक्कन का चौथ और वहाँ की सरदेशमुखी इस शर्त पर दे दी गई कि उसकी वसूली मुगल अधिकारी करेंगे और फिर मराठा अधिकारियों को दे देंगे।

जहाँदारशाह ने अपने धायभाई कोकलताश को महत्वपूर्ण पद दे दिया था। कोकलताश ने एक ऐसा संगठन तैयार किया, जिसका कार्य सम्राट की शक्तियों को उसी के हाथों में केन्द्रित रखने का था। जहाँदारशाह एक अयोग्य शासक था। जिस पर एक वेश्या लालकुँवर का अत्यधिक प्रभाव था। इस स्थिति का लाभ उठाते हुए अजीमुश्शान के पुत्र फर्रूखसियर ने हिन्दुस्तानी अमीर सैयद बन्धुओं के सहयोग से जहाँदारशाह को सिंहासन से अपदस्थ करवा 11 फरवरी, 1713 को हत्या करवा दी।

फर्रूखसियर (1713–1719 ई.)

फर्रूखसियर ने सैयद बन्धुओं अब्दुल्ला खाँ और हुसैन अली खाँ बराहा के सहयोग से सिंहासन प्राप्त किया। उत्तरवर्ती मुगलकाल में अमीरों के विभिन्न गुटों की शासक निर्माता के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका थी, इस समय ईरानी, तूरानी तथा हिन्दुस्तानी गुट के अमीर मुगल राजदरबार में सक्रिय थे। फर्रूखसियर के शासनकाल में सिक्ख नेता बन्दा बहादुर गुरूदासपुर में पकड़ा गया और 19 जून, 1716 को मारा गया। मराठा छत्रपति शाहू स्वराज्य तथा दक्कन में चौथ तथा सरदेशमुखी वसूलने का अधिकार अली बन्धुओं ने बादशाह से दिलवाया जिसके बदले शाहू 15000 घुड़सवारों के साथ मुगलों को दक्कन में सहायता देने को तैयार हो गया।

रफी-उद्-दरजात (1719 ई.)

सैयद बन्धुओं ने इसे भी गद्दी पर बिठाया। इसकी मृत्यु क्षयरोग (टीबी) से हुई। रफी-उद्-दरजात की सबसे महत्वपूर्ण घटना निकूसयर का विद्रोह थी। निकूसियर अकबर द्वितीय का पुत्र था। यह सबसे कम समय का शासन करने वाला मुगल शासक था।

रफी-उद्-दौला (1719 ई.)

रफी-उद्-दौला दूसरा सबसे कम समय तक (6 जून से 17 सितम्बर, 1719) शासन करने वाला मुगल सम्राट था। उसे अपने जीवनकाल में एक बार महल से बाहर निकलने दिया गया, जब उसने आगरा के लिए प्रस्थान किया था। इसने शाहजहाँ द्वितीय की उपाधि धारण की।

मुहम्मदशाह (1719–1748 ई.)

रौशन अख्तर सैयद बन्धुओं के सहयोग से सितम्बर, 1719 में मुहम्मदशाह की उपाधि के साथ मुगल राजसिंहासन पर बैठा। अत्यधिक विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करने के कारण इसे रंगीला कहा गया। इसके काल में सैयद बन्धुओं का अन्त तूरानी दल के नेता चिनकिलिच खाँ ने किया। अतः मुहम्मदशाह ने चिनकिलिच खाँ को अपना वजीर नियुक्त किया।

1724 ई. में चिनकिलिच खाँ (निजामुलमुल्क) ने दक्कन में स्वतंत्र हैदराबाद राज्य की स्थापना की, मुहम्मदशाह ने उसकी स्वतंत्रता को मान्यता देते हुए उसे आसफजाह की उपाधि प्रदान की। इसके शासलकाल में मराठों ने 1737 ई. में दिल्ली पर चढ़ाई कर दी और उनका किसी ने प्रतिरोध नहीं किया। 1738 ई. में मुगल-मराठा सन्धि सिरौज में हुई जिसके तहत 50 लाख की आर्थिक सहायता के बदले शासक ने नर्मदा तक मराठा अधिकार को मान्यता प्रदान कर दी।

मुहम्मदशाह के शासनकाल में नादिरशाह (ईरान का नेपोलियन) ने 1738-39 ई. के बीच भारत पर आक्रमण किया, जिसमें मुगल सेना बुरी तरह पराहित हुई। 57 दिनों तक दिल्ली में लूटपाट करने के बाद 1739 ई. में वह वापस चला गया। वापस लौटते वक्त वह मुगल राजसिंहासन तख्त-ए-ताऊस, कोहिनूर हीरा तथा मुहम्मदशाह द्वारा तैयार करवाई गई हिन्दू संगीत की प्रसिद्ध चित्रित फारसी पाण्डुलिपि को भी अपने साथ ले गया।

अहमदशाह (1748–1754 ई.)

28 अप्रैल, 1748 को अहमदशाह दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। इसके काल में नादिरशाह के उत्तराधिकारी अहमदशाह अब्दाली ने 5 बार (कुल 7 बार) भारत पर आक्रमण किया। अहमदशाह अब्दाली को दुर्रे दुर्रानी (युग का मोती) कहा गया है।

आलमगीर द्वितीय (1754–1759 ई.)

आलमगीर द्वितीय अपने वजीर इमादुलमुल्क का कठपुतली शासक था। गाजीउद्दीन ने उसे सत्ताच्युत कर उसकी हत्या करवा दी। आलमगीर द्वितीय के बाद अलीगौहर शाहआलम द्वितीय की उपाधि के साथ मुगल बादशाह बनाया गया।

शाहआलम द्वितीय (1759–1806 ई.)

शाहआलम द्वितीय और उसके उत्तराधिकारी केवल नाममात्र के सम्राट थे। इसके समय में पानीपत का तृतीय युद्ध (1761 ई.) तथा बक्सर का युद्ध (1764 ई.) हुआ था। बक्सर के युद्ध में पराजित होने के बाद शाहआलम द्वितीय को 1765 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी से इलाहाबाद की सन्धि करनी पड़ी, जिसके पश्चात् उसे कई वर्षों तक इलाहाबाद में अंग्रेजों को पेंशनयाफ्ता बनकर रहना पड़ा। 1772 ई. में मराठों के संरक्षण में दिल्ली पहुँचा तथा 1803 ई. में शाहआलम द्वितीय को अन्धा बना दिया गया। 1806 ई. में शाहआलम द्वितीय की हत्या कर दी गई।

अकबर द्वितीय (1806– 1837 ई.)

शाहआलम द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र अहमदशाह अकबर द्वितीय के नाम से मुगल बादशाह बना। अकबर द्वि तीय अंग्रेजों के संरक्षण में बनने वाला प्रथम मुगल बादशाह था। इसी के समय में 1835 ई. में मुगलों के सिक्के बन्द हो गए। इसने ब्रह्म समाज के संस्थापक राम मोहन राय को 'राजा' की उपाधि दी तथा उन्हें अपनी पेंशन बढ़वाने की पैरवी हेतु इंग्लैण्ड भेजा। 1837 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

बहादुरशाह द्वितीय (1837– 1862 ई.)

अकबर द्वितीय की मृत्यु के बाद बहादुरशाह द्वितीय अन्तिम मुगल सम्राट हुए। बहादरुशाह द्वितीय जफर के नाम से कविता तथा शायरी लिखते थे, इसलिए वह बहादुरशाह जफर के नाम से प्रसिद्ध थे। 1857 ई. के विद्रोह में विद्रोहियों का साथ देने के कारण अंग्रेजों ने उन्हें गिरफ्तार कर रंगून निर्वासित कर दिया, जहाँ 1862 ई. में उनकी मृत्यु हो गई।

मुगल साम्राज्य के पतन का कारण

मुगल साम्राज्य के पतन के अनेक कारण थे—

- यदुनाथ सरकार, आर. एस. शर्मा, लीवरपूल के मतानुसार औरंगजेब की धार्मिक, राजपूत व दक्कन नीति साम्राज्य के पतन का कारण बनी।
- सतीश चन्द्र, इरफान हबीब, अतहर अली आदि जागीरदारी संकट, मनसबदारी व्यवस्था में कमियों आदि की दीर्घकालीन प्रक्रिया को पतन का कारण मानते हैं।

- वास्तव में न केवल औरंगज़ेब की नीतियाँ बल्कि साम्राज्य की खस्ता वित्तीय हालत योग्य उत्तराधिकारियों का अभाव, दरबारी षड्यन्त्र आदि भी मुगल साम्राज्य के पतन का कारण रहे।

विभिन्न प्रान्तीय स्वायत्त राज्य (Different Provincial Autonomous Powers)

मुगल साम्राज्य के उत्तरोत्तर शिथिल होते रहने से एक प्रकार से राजनैतिक रिक्तता की स्थिति उत्पन्न होती जा रही थी। इसी समय भारत में कुछ स्वतंत्र प्रान्तीय स्वायत्त राज्यों का उद्भव हुआ। इनमें अवध, हैदराबाद, मैसूर, पंजाब, रूहेलखण्ड, राजपूत, मराठे आदि प्रमुख थे।

हैदराबाद

निजाम-उल-मुल्क आसफजाह प्रथम बार 1713-1715 ई. तक दक्कन का सूबेदार रहा। जिसका असली नाम चिनकिलिच खाँ था, जिसे 1722-1724 ई. में मुगल बादशाह मुहम्मद शाह द्वारा मुगल साम्राज्य का वजीर नियुक्त किया गया, किन्तु दरबारी षड्यन्त्रों से तंग होकर वह दक्कन वापस चला गया।

दक्कन में स्वतंत्र राज्य की स्थापना का स्वप्न सजोने वाला पहला व्यक्ति जुल्फिकार खाँ था, किन्तु दक्कन में स्वतंत्र राज्य की स्थापना निजामुलमुल्क द्वारा की गई। इसके 1724 ई. में हैदराबाद में आसफजाही वंश की स्थापना की।

अवध

पश्चिम के कन्नौज से लेकर पूर्व में कर्मनाशा नदी तक फैला अवध का सूबा एक विस्तृत और समृद्धशाली राज्य था। सआदत खान बुरहान-उल मुल्क (1722-39 ई.) अवध के स्वायत्त राज्य का संस्थापक था। सआदत खाँ ने ही नादिरशाह को दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया था तथा उसे 20 करोड़ रुपए प्राप्त होने की आशा दिलाई थी। नादिरशाह से किए गए अपने वादे को पूरा न कर पाने के कारण ही 1739 ई में उसने आत्महत्या कर ली।

सआदत खाँ के बाद उसका भतीजा तथा दामाद सफदरजंग अवध का नवाब बना। उसने फर्रूखाबाद के बंगश पठानों और जाटों के विरुद्ध सैन्य अभियान किए। 1753 ई. में बादशाह अहमदशाह ने सफदरजंग को वजीर के पद से बर्खास्त कर दिया। 1754 ई. में अवध में इसकी मृत्यु हो गई।

सफदरजंग के बाद उसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र शुजाउद्दौला बना। जिसके 1759 ई. में अलीगौहर (मुगल बादशाह आलम द्वितीय) को लखनऊ में शरण दी। 1761 ई. में लड़े गए पानीपत के तृतीय युद्ध में शुजाउद्दौला ने अहमदशाह अब्दाली का साथ दिया।

अवध का अगला नवाब सआदत खाँ (1738-1814 ई.) बना, जिसने अंग्रेजों से सहायक सन्धि कर ली। अंग्रेजों ने अवध को तब तक एक मध्यवर्ती राज्य के रूप में प्रयोग किया, जब तक कि उनका मराठों पर पूर्ण नियंत्रण नहीं हो गया। अवध के अन्तिम नवाब वाजिद अलीशाह (18 47-1856 ई.) के शासनकाल में अवध पर कुशासन का आरोप लगाकार अंग्रेजों ने 1856 ई. में ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।

कर्नाटक

स्वतंत्र कर्नाटक राज्य की स्थापना 1720 ई. में सादतुल्ला खाँ ने की। सादतुल्ला खाँ ने अपने भतीजे दोस्त अली को हैदराबाद के निजाम की अनुमति के बिना ही अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। मराठों ने 1740 ई. में दोस्त अली की हत्या कर दी। इसकी मृत्यु के बाद उसका उत्तराधिकारी सफदर अली बना।

भरतपुर

दिल्ली, मथुरा तथा आगरा के समीपवर्ती क्षेत्रों में जाट लोगों का निवास था। जाटों ने औरंगज़ेब की नीतियों के विरुद्ध विद्रोह किया था। चूड़ामन ने 1700 ई. में भरतपुर राज्य की स्थापना की। चूड़ामन की मृत्यु (1763 ई.) के बाद उसके भतीजे बदन सिंह (1721-1756 ई.) ने जाटों का नेतृत्व सम्भाला। उसने एक शक्तिशाली सेना का गठन किया और नादिरशाह के आक्रमण के पश्चात् हुई अव्यवस्था का लाभ उठाकर आगरा तथा मथुरा पर अधिकार जमा लिया।

अहमदशाह अब्दाली ने बदन सिंह को राजा की उपाधि दी, जिसमें महेन्द्र शब्द भी जोड़ दिया गया। 1756 ई. में सूरजमल इस राज्य का उत्तराधिकारी बना। इसे जाटों का अफलातून भी कहा जाता है। पानीपत के तृतीय युद्ध में जाट सूरजमल के नेतृत्व में मराठों को सहयोग देने के लिए राजी हो गए थे। सदाशिवराव भाऊ से मतभेद हो जाने के कारण उन्होंने अपने आपको पानीपत के तृतीय युद्ध से अलग कर लिया। 1763 ई. में सूरजमल की मृत्यु के बाद जाट राज्य का पतन प्रारंभ हो गया।

रुहेलखण्ड

स्वतंत्र रूहेलखण्ड की स्थापना वीर दाउद एवं अली मुहम्मद खाँ ने की। बरेली में एक छोटी-सी जागीर का विस्तार कर रूहेलखण्ड में एक स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया जो, उत्तर में कुमाऊँ से दक्षिण में गंगा नदी तक फैल गया। मुहम्मद खाँ बंगश ने फर्रूखाबाद के आस-पास के क्षेत्रों पर अधिकार कर स्वतंत्र 'बंगश-पठान' राज्य की स्थापना की।

पंजाब

सिक्ख गुरूओं के अधीन पंजाब में सिक्खों का अभ्युदाय हुआ। 1767 ई. में अहमदशाह अब्दाली के कारण वहाँ अव्यवस्था फैल गई। पानीपत के तृतीय युद्ध के पश्चात् सिक्खों के सर्वाधिक गौरवपूर्ण इतिहास का प्रारंभ हुआ। इस अवधि में सिक्खों ने अफगान आक्रमणकारियों का डटकर सामना किया। 1763 ई. से 1773 ई. के बीच पंजाब में छोटे-छोटे सिक्ख राज्यों की स्थापना हुई, ये राज्य मिसल कहलाते थे। जस्सा सिंह के नेतृत्व में ही दल खालसा 12 स्वतंत्र मिसल या जत्थों में विभाजित हो गया।

प्रत्येक मिसल का अपना एक झण्डा, नाम तथा निशान होता था। उत्तरवर्ती मुगल शासकों द्वारा अहलूवालिया मिसल के संस्थापक सरदार जस्सा सिंह को सुल्तान-ए-कौम की उपाधि मिली। इनमें से पाँच शक्तिशाली मिसलें थीं—भंगी, अहलूवालिया, सुकरचकिया, कन्हैया तथा नक्कई, इनमें भंगी मिसल सबसे शक्तिशाली थी।

तालिका 14.1: बारह सिक्ख मिसलें

मिसल	संस्थापक
सुकरचकिया मिसल	चरत सिंह
अहलूवालिया मिसल	जस्सा सिंह
सिंहपुरिया मिसल	नवाब कपूर सिंह
रामगढ़िया मिसल	जस्सा सिंह रामगढ़िया
फुलकिया मिसल	फूल सिंह चौधरी
डले वालिया मिसल	गुलाब सिंह
निशान वालिया मिसल	सरदार संगत सिंह
भंगी मिसल	हरि सिंह
कन्हैया मिसल	जय सिंह
शहीदी मिसल	बाबा दीप सिंह
नक्कई मिसल	हीरा सिंह
करोड़ सिन्धिया मिसल	करोरा सिंह

रणजीत सिंह (1792–1839 ई.)

रणजीत सिंह सुकरचकिया मिसल के प्रमुख महासिंह के पुत्र थे। 1799 ई. में रणजीत सिंह ने लाहौर पर अधिकार कर लिया। जमान शाह ने उन्हें राजा की उपाधि देकर और लाहौर का सूबेदार मान लिया।

1805 ई. में रणजीत सिंह ने अमृतसर को भंगी मिसल से छीन लिया। इस तरह पंजाब की राजनीतिक राजधानी लाहौर एवं धार्मिक राजधानी अमृतसर दोनों उसके अधीन हो गई। 1805 ई. में अंग्रेजों से पराजित होकर जसवन्त राव होल्कर पंजाब पहुँचा। जनरल लेक इसका पीछा करता हुआ व्यास नदी तक आया और रणजीत सिंह से होल्कर को शरण न देने को कहा।

अत: दोनों के मध्य एक सहयोग समझौते के द्वारा होल्कर को अमृतसर छोड़ना पड़ा, बदले में अंग्रेजी फौज पंजाब से हटा ली गई। 1809 ई. में रूस और फ्रांस की सन्धि की देखते हुए लॉर्ड मिण्टो ने रूसी प्रभाव से सुरक्षा के उद्देश्य से चार्ल्स मेटकॉफ को रणजीत सिंह के पास भेजा और दोनों के मध्य अमृतसर की सन्धि हुई।

अमृतसर की सन्धि (1809 ई.)

यह सन्धि मेटकॉफ और रणजीत सिंह के बीच हुई। इस सन्धि की प्रमुख शर्तें निम्नलिखित थीं—

- सतलुज नदी को राज्यों की सीमा मान लिया गया।
- लुधियाना में एक अंग्रेजी सेना रखी गई, जिससे रणजीत सिंह इस तरफ आक्रमण न कर सके।
- सतलुज के पूरब के राज्य अब अंग्रेजों के अधीन आ गए।

अमृतसर की सन्धि के परिणामस्वरूप रणजीत सिंह ने सतलुज नदी से ऊपर अपना साम्राज्य विस्तार प्रारंभ कर दिया। अत: शीघ्र ही 1809 ई. में काँगड़ा तथा 1813 ई. में अफगान अमीर शाहशुजा से कश्मीर को अपने संरक्षण में ले लिया, उसी ने कोहिनूर हीरा भी इन्हें प्रदान किया। अन्त में रणजीत सिंह ने 1819 ई. में कश्मीर पर अब्दाली के उत्तराधिकारियों द्वारा नियुक्त गवर्नर जब्बार खाँ को अपदस्त कर कश्मीर पर पूर्णत: नियंत्रण कर लिया। इसी प्रकार 1818 ई. में मुल्तान पर अधिकार कर लिया।

1820–21 ई. में इन्होंने डेरा गाजी खाँ, डेरा इस्माइल खाँ तथा लेह को जीत लिया। 1834 ई. में पेशावर को सिक्ख राज्य का अंग बना लिया। रणजीत सिंह ने सामरिक महत्व के क्षेत्र शिकारपुर (जिसे खुरासान का द्वार समझा जाता था) पर अधिकार कर लिया, तब अंग्रेजों ने उन्हें शिकारपुर छोड़ देने को कहा। सिक्ख सैनिक लड़ना चाहते थे, लेकिन रणजीत सिंह ने अंग्रेजों की बात मान ली।

1835 ई. में लाहौर से 40 किमी.-दूर फिरोजपुर जो कभी अंग्रेजों और रणजीत सिंह के बीच झगड़े का कारण था, को अंग्रेजों ने जीत कर अपने अधीन कर लिया।

रणजीत सिंह के बाद पंजाब की स्थिति

1839 ई. में रणजीत सिंह की मृत्यु के पश्चात् पंजाब में राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न हो गई। उसका पुत्र खड्गसिंह उत्तराधिकारी बना। खड्गसिंह के प्रशासन में इसके वजीर ध्यानसिंह का हाथ था। 1840 ई. में खड्गसिंह की मृत्यु हो गई और उसी वर्ष एक और पुत्र नैनिहाल सिंह (पुत्रों में सबसे योग्य) की भी मृत्यु हो गई। इसके बाद खड्गसिंह की विधवा चाँदकौर और रणजीत सिंह के पुत्र शेरसिंह में संघर्ष हुआ। खालसा सेना के सहयोग से चाँदकौर का वध कर दिया गया। इसके बाद 1840 ई. में शेरसिंह राजा बना।

चाँदकौर के समर्थक अजीत सिंह ने 1843 ई. में शेर सिंह की हत्या कर दी और इस प्रकार रानी झिन्दन की संरक्षिता में दिलीप सिंह 1843 ई. में राजा बने। दिलीप सिंह के काल में दो आंग्ल-सिक्ख युद्ध हुए।

प्रथम आंग्लो-सिक्ख युद्ध (1845-1846 ई.)

यह युद्ध रानी झिन्दन की जिद के कारण हुआ था। इस युद्ध में अंग्रेजी सेना ने लाहौर को जीत लिया। इस युद्ध के समय भारत का गवर्नर जनरल लॉर्ड हार्डिंग (प्रथम) था।

अमृतसर की सन्धि (8 मार्च, 1846) प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध से समाप्त हुआ, जिसके तहत एक ब्रिटिश रेजीडेण्ट सर हेनरी लॉरेन्स को लाहौर में तैनात किया गया। लाहौर दरबार पर 1.5 करोड़ रुपए जुर्माना लगाया गया तथा दिलीप सिंह को महाराजा एवं झिन्दन को संरक्षिका नियुक्त किया गया।

द्वितीय आंग्लो-सिक्ख युद्ध (1848-1849 ई.)

लाहौर की सन्धि के अनुसार ब्रिटिश सेना को 1846 ई. तक वापस लौट जाना था, किन्तु महाराजा के अल्पवयस्क होने का बहाना लेकर ब्रिटिश सेना वही बनी रही।

1848 ई. में अंग्रेजों ने मुल्तान के गवर्नर मूलराज को 20 लाख रुपए जुर्माना तथा रावी के उत्तर का क्षेत्र अंग्रेजों को सौंपने के फरमान पर सिक्खों ने विद्रोह कर दिया। परिणामस्वरूप लॉर्ड डलहौजी ने भी सिक्खों के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी।

1849 में सिक्खों की पराजय के साथ ही चार्ल्स नेपियर ने पंजाब को ब्रिटिश राज्य में सम्मिलित कर लिया तथा दिलीप सिंह को पेंशन देकर इंग्लैण्ड भेज दिया गया।

अध्याय सार संग्रह

- उत्तरवर्ती मुगल बादशाह मुहम्मद शाह के शासनकाल में 1739 ई. में नादिर शाह ने भारत पर आक्रमण किया।
- आलमगीर द्वितीय के शासन काल में 1757 ई. प्लासी का युद्ध हुआ।
- मुगल साम्राज्य के विघटन के दौर में सुबेदार मुर्शिद कुली खाँ ने बंगाल में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।
- बहादुर शाह प्रथम ने सिक्खों के नेता वीर बंदा बैरागी को पराजित किया था।
- सिक्खों का उद्‌भव रणजीत सिंह के नेतृत्व में हुआ।
- सिक्ख राज्य 12 मिस्लों में बँटा था। रणजीत सिंह सुकरचकिया मिस्ल के थे।
- जहांदारशाह के शासनकाल में इज़ारेदारी प्रथा शुरू की गई, जिससे सामंत निरंकुश हो गए।
- बहादुर शाह के सुचारू शासन संचालन में उसके वज़ीर मुनीम खां तथा मीर बख्शी जुल्फिकार खां का विशेष योगदान था।
- 1724 ई. में मुगलों के अवध के सूबेदार बुरहान मुल्क ने स्वतंत्र अवध राज्य की घोषणा की।
- इलाहाबाद की संधि अंग्रेज़ों और शाह आलम द्वितीय के बीच हुई थी।
- 1765 ई. में मुगल बादशाह ने अंग्रेज़ों को बंगाल, बिहार, और उड़ीसा की दीवानी प्रदान की।
- अकबर द्वितीय के समय 1806 ई. में से लेकर 1837 तक के इसके प्रतीकात्मक शासनकाल में लगभग सम्पूर्ण भारत अंग्रेज़ों के नियंत्रण में चला गया था।
- 1857 ई. में अंग्रेज़ों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया तथा बहादुर शाह द्वितीय को रंगून निर्वासित कर दिया।
- रणजीत सिंह भारत के प्रथम शासक थे जिन्होंने सहायक संधि को अस्वीकार कर अंग्रेजों के संरक्षण की नीति को ठुकरा दिया।
- रणजीत सिंह को अफगान का शासक माहभुजा से प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा प्राप्त हुआ जिसे नादिरशाह लाल किले से लूटकर ले गया था।
- टीपू प्रथम भारतीय शासक था जिसने अपनी प्रशासनिक व्यवस्था में पाश्चात्य प्रशासनिक व्यवस्था का मिश्रण किया।
- शाह आलम द्वितीय के समय में 1803 ई. में दिल्ली पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।
- बहादुरशाह ने मराठों और राजपूतों के प्रति मैत्रीपूर्ण नीति अपनायी तथा जजिया कर पर प्रतिबंध लगा दिया।